© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 04 | July - September 2017

संस्कृत–साहित्य
संस्कृत वैदिक, लौकिक और पौराणिक साहित्य में कृषि एवं कृषक का महत्त्व

सीमा रानी, शोध–छात्रा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

शोध–आलेख सार–

भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा प्राचीनकाल से ही भारत के आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक जीवन ओर गौरवपूर्ण इतिहास के सन्दर्भ में कृषि की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मानव सभ्यता के आदिकाल अथवा सभ्य जीवन का प्रारंभ पशुपालन एवं कृषि के साथ ही होता है। ऋग्वैदिक काल में कृषि की पूर्ण विकास हो चुका था। प्राचीन मनीषियों ने सहस्त्राब्दी पूर्व मानवीय सभ्यता के शुभ–चरण में प्रकृति प्रदत्त संसाधनों के महत्त्व और मूल्य समझ लिया था और पंचमहाभूतों के पारस्परिक समन्वय से उत्पन्न वन्य शस्य उत्पादों को संस्कारित करते हुए व्यवस्थित रूप में भूमि पर उगाना प्रारंभ किया उन्हें ज्ञात था कि कृषि ही राष्ट्र समृद्धि का मूलभूत कारण है प्रकृत शोध–पत्र में वैदिक, लौकिक और पौराणिक साहित्य के कृषि एवं कृषक की महत्ता को प्रस्तुत किया जा रहा है।

ISSN : 2348-5612 © URR

मुख्य शब्द– अर्थव्यवस्था, सस्यसम्पदा, अश्वत्थरोपण, क्रान्तदर्शी

वैदिक साहित्य

संस्कृत वाङ्मय के अजस्र प्रवाह में प्राच्य ज्ञान–विज्ञान की अनेक समृद्ध शास्त्रीय शाखाओं में कृषि विद्या अन्यतम अनुशासन के रूप में सुस्थापित है। भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार कृषि है। वैदिक ऋषियों ने जाना कि अर्थव्यवस्था की उन्नति के लिए कृषि ही एक मात्र उपाय है। वेद में कहा गया–

'भूमिरावपन महत्'[1] कृषि का महानस्थान भूमि है। कृषि की सेवा से पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि होती है। इसी भूमि पर अपने पुरुषार्थ का वपन करने से हमें ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। वैदिक ऋषि पृथ्वी को माता कहते हैं। उसे प्रणाम करते हुए कहा गया कि हम कृषि के लिए, अपनी रक्षा के लिए पोषण के लिए, ऐश्वर्य के लिए तुम्हारी वंदना करते है।

'नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्या।
कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा।[2]

[1] भूमिरावपन महत्। (यजुर्वेद 23.46)
[2] नमो मात्रे ..... पोषायत्वा।। (यजुर्वेद 9.22)

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 04 | July - September 2017

मानव जीवन अन्न पर निर्भर है और अन्न की प्राप्ति कृषि से होती है। अतः कृषि मानव जीवन का आधार है वैदिक काल में कृषि अत्यन्त गौरवपूर्ण कार्य माना जाता था इसलिए इन्द्र और पूषा दोनों देवों को इसमें योजित किया गया– इन्द्रः सीताम् निगृ्णातु[3] अथर्ववेद में वर्णन है कि विराट बह्म जब मनुष्य के निकट पहुंचे तो उन्होंने इसे इरावती या अन्न समृद्धि का सम्बोधन दिया। इस इरावती के दोहन से ही कृषि और सस्य प्राप्त किये गये। कृषि और अन्न से ही मानव जीवन संचालित होता है–

'ते कृषिं च सस्यं च मनुष्याः उपजीवन्ति'[4]

ऋग्वेद के क्षेत्रपति, पर्जन्य, पृथ्वी, गो, आपः, अक्ष, नदी, विश्वेदेवा तथा आरण्यानी सूक्तों में कृषि की महत्ता का विवेचन है इसी प्रकार अथर्ववेद के कृषिसूक्त, अन्नसूक्त, अन्नसमृद्धि सूक्त, ओदनसूक्त, ब्रह्मोदनसूक्त एवं वृष्टि सूक्त में कृषि के गौरव का गुणगान हुआ है। वैदिक काल में कृषि और पशुपालन का विकास हो चुका था। गाय क तो अनेकानेक सन्दर्भ वेद में है, गाय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार थी। गाय के अतिरिक्त अश्व, अजा, अविका आदि अन्य पालतू पशु थे वैदिक काल में अन्न उत्पन्न करने के कारण किसान के लिए अन्नपति, अन्नाद जैसे शबदों का प्रयोग किया गया है। अथर्ववेद के कृषि सूक्त में विद्वज्जन सुख प्राप्त करने के लिए करते हैं। कृषि कर्म को वेद में सर्वाधिक महत्त्व दिया गया और वैदिक प्रार्थनाओं में कृषि समृद्धि और प्रक्रिया के निर्बाध रहने की प्रार्थनायें की गई–

शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं,
शुन कीनाशा अभियन्तु वाहैः।
शुन पर्यन्यो मधुना पयोभिः,
शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम्।[5]

तैतिरीपोपनिषद में अन्न का महत्त्व व्यापक रूप से बताया गया जहाँ अन्न को प्राण, अधिपति और बह्म कहा गया– अन्नं बैः प्राणिणां प्राणाः अन्नं साम्राज्यानाम् अधिपतिः[6] अधिकाधिक अन्न उत्पादन का संकल्प इस उपनिषद् में प्राप्त होता है– अन्नं बहुकुर्वीत तद्वृतम्। ऋग्वेद में कहा गया कि कृषि से सम्पति प्रसन्नता, पशुधन और सुखद दाम्पत्य प्राप्त किया जा सकता है।[7] कृषि प्राचीनकाल से ही सुख समृद्धि, स्वास्थ्य और श्रेष्ठ सामाजिक जीवन की हेतु रही है। आज भी देश की अर्थव्यवस्था बड़े–बड़े बाधों, नहरों और कारखानों, कृषि उपकरण उद्योगों तथा कृषि

---

[3] अथर्ववेद 3.17.4
[4] अथर्ववेद 8.10.24
[5] शनुं नः फला ..... अस्मासु धत्तम्। ऋग्वेद 4.47.8
[6] तैतिरीयोपनिषद्, 9
[7] ऋग्वेद 10.34.13

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 04 | July - September 2017

उत्पादन प्रसंस्करण एवं कृषिजन्य उत्पादों से संबंधित उद्योगों पर टिकी हुई है। वेद में कृषि को पवित्र कार्य कहा गया और कृषक का स्थान समाज में अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा।

क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि।
गामश्च पोषयित्न्वा स नो मुलातीदृशे।।
क्षेत्रस्यपते मधुमन्तभूर्मि
धेनुरिवं पयो अस्मासु धुक्ष्व।
मधुश्चतंधृतमिव सुपूतमृतस्य नः पतयोः मूलयन्तु।।
मधुमतीरोपणीर्गाव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्।
क्षेत्रस्य पतिमधुमान् नो अस्त्वतरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम।।[8]

लौकिक साहित्य

रामायणकालीन समाज में भी कृषि का अन्यतम स्थान रहा। आर्ष महाकाव्य रामायण तत्कालीन समाज के जीवन दर्शन को प्रस्तुत करता है। आर्थिक व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। जनपद समृद्धि का प्रतीक उनकी सम्यसमादा व धन धान्यता ही थी। कौशल देश के विषय में कहा गया है–

कोशलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान्।
निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान्।।
अयोध्या की समृद्धि का द्योतक भी धान्यसम्पति रही।
इयं सराष्ट्रा सजना धनधान्य समाकुला।[9]

तत्कालीन समाज में आर्थिक उन्नति के लिए कृषि व्यवस्था राजकीय संरक्षण में होती थी। राजा स्वयं कृषि ज्ञान से पूर्ण परिचित होता था। राजा जनक जब स्वयं हल चलाकर भूमि शोधनकर रहे थे तब उन्हें जोती हुई भूमि से सीता की प्राप्ति हुई थी–

अथ में कृषतः क्षेत्रं लौ.लादुत्थिता ततः।
क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विक्षुता।।[10]

राज्य समृद्धि के लिए कृषि और गोरक्षा पर जीवन व्यतीत करने वाले जनों का भरण–पोषण और सम्मान करना राजा का कर्तव्य था। राज्य की समृद्धि के लिए उनकी प्रसन्नता और संतुष्टि आवश्यक थी। इसी चित्रकूट पर मिलने आए भरत से राम ने पूछा–

कच्चित् ते दयिताः सर्वे कृषिगोरक्ष जीविनः।[11]

महाभारत में भी कृषि के महत्त्व को अनेक स्थानों पर वर्णित किया गया है। इसके अनुसार वेन के पुत्र पृथु ने सर्वप्रथम विषम भूमि को समतल कर उसे कृषि योग्य बनाया और सत्रह प्रकार के अन्न उत्पन्न किए–

राजा पृथुर्वैन्यः प्रतापवान् समतां वसुधायाश्च स सम्यगुदपादयत्

---

[8] क्षेत्रस्य पतिना ..... अन्वेनं चरेग। ऋग्वेद 4.57.1 – 3
[9] इयं सराष्ट्रा सजना धनधान्य समाकुला। रामायण। 2.34.41
[10] अथ मे ..... सीतेति विश्रुता। रामायण 1.66. 13–14
[11] कच्चित् ते दयिताः सर्वे कृषिगोरक्ष जीविनः। रामायण 2.118.29

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 04 | July - September 2017

वैषम्यं हि पर भूमेरासीदिति च नः श्रुतम्
उज्जहार ततो वैन्यः शिलाजालान् समन्ततः
तेनेयं पृथिवी दुग्धा सस्यानि दशसप्त च।[12]

पौराणिक साहित्य–

पौराणिक साहित्य में अनेक स्थानों पर कृषि और कृषकों की प्रशंसा की गई है। वृक्षारोपण के महत्त्व को भी अधिक प्रतिपादित किया गया है वृक्षारोपण करने वाले जनों को अनेक प्रकार के पुण्यों का लाभ प्राप्त होता है क्योंकि प्रकृति पर्यावरण तथा प्राणिमात्र के कल्याण के लिऐ फल–फूल, छायादार पौधे तथा लता–गुल्मादि का रोपण बताया गया है। पद्मपुराण में कहा गया है कि अश्वत्थरोपण से पुत्रत्व प्राप्ति, धन प्राप्ति और अशोक से शोक का नाश होता है। एक अश्वत्थ हजार पुत्रों के समान कार्य करता है–

अपुत्रस्य च पुत्रत्यं पादपा इह कुर्वते
यक्षेनापि च राजेन्द्र! अश्वत्यरोपणाम् कुरु
स ते पुत्र सहस्त्राणां कार्यमेकः करिष्याति
धनी चाश्वत्थवृक्षेण अशोकः शोक नाशनः।[13]

अग्नि पुराण में कहा गया कि फल–फूल और छायादार पौधे लगाने वाला मनुष्य सदैव भगवतप्रसाद को प्राप्त करता है।[14]

प्राचीन भारतीय क्रान्तदर्शी मनीषियों ने खेती के मूल्यों को सर्वोपरि माना तथा मनुष्य के कल्याण के लिये उत्तमवृत्ति के रूप में कृषि को महत्त्व प्रदान किया। प्राणिमात्र के जीवन के लिये कृषि कर्म का अधिकाधिक प्रचार व प्रसार हुआ। कृषिवृति वाले मनुष्य को समाज में सर्वोपरि सम्मान प्राप्त हुआ, उसे सर्वाधिक पुण्यवान तथा पवित्रतम कर्म को करने वाला माना गया। निरन्तर कृषि विकास के लिए संस्कृत–साहित्य प्रेरणा प्रदान करता है। 'प्रकृति की उपासना चतुवर्ग की साधना' के मूल मन्त्र में वर्तमान समस्याओं के समाधान छिपे है। वर्तमान की गम्भीर कृषिगत समस्याओं का समाधान संस्कृत कृषि तन्त्र या वैदिक कृषि मॉडल से संभव है। आज से 4–5 हजार वर्ष पूर्व का क्रान्तदृष्टा कृषि चिंतन आज भी पासंगिम तथा प्रशस्त है।

---

[12] राजा पृथुर्वैन्य ..... दश सप्त च । महाभारत शान्तिपर्व– 59, 113–115, 124
[13] अपुत्रस्थ च पुत्रत्यं ..... शोक नाशनः। पद्म पुराण, सृष्टि खण्ड अध्याय 36
[14] अग्निपुराण वृक्षाआदि प्रतिष्ठा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निपुराणः संपादक आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा संस्कृत सोरिज ऑफिस, वाराणसी, 1999
2. अथर्ववेद संहिताः सम्पादक पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य, शांतिकुंज, हरिद्वार
3. अर्थवेद संहिताः सम्पादक पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, पारड़ी
4. अथर्ववेद संहितः संपा. शंकर पाडुंरंगपंडित, रामदास अकादमी वाराणसी, 1889
5. ऋग्वेद संहिता : पं. श्रीपाद दामोदार सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, पारडी
6. ऋग्वेद संहिताः सम्पादक रामगोविन्द त्रिवेदी, चौखम्बा विद्या भवन वाराणस 2003
7. तैत्तिरीय संहिताः सम्पादक पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, पारड़ी
8. पद्म पुराणः राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, दिल्ली
9. महाभारतः नीलकंठीटीका सहित राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, दिल्ली
10. यजुर्वेद सहिंताः संपादक पं. श्री पाद दामोदार सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, पारडी
11. यजुर्वेद संहिताः पं. वासुदेव शर्मा, चोखम्बा संस्कृत संस्थान 2003
12. रामायणः संपादक रामतेज पाण्डेय चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, वाराणसी।